IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

जयशंकर प्रसाद के नाटकों का सांस्कृतिक पक्ष

प्रो.डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
प्रभारी प्राचार्य तथा अध्यक्ष, हिंदी विभाग
विलिंग्डन महाविदयालय, सांगली (स्वायत्त)
dr.satappasawant@gmail.com

शोध सारांश : *जयशंकर प्रसाद के नाटक भारतीय संस्कृति के प्रबल तथा सशक्त संवाहक कहे जा सकते हैं। उन्होंने स्वाधीनता पूर्व कालखंड में इतिहास, समाज,नारी, दर्शन और राष्ट्र आदि भारतीय आयामों को अपनी नाट्यकला के माध्यम से एक समग्र सांस्कृतिक परिबंध प्रदान किया है। प्रसाद की नाट्यकला सिर्फ अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान तथा भविष्य के लिए सांस्कृतिक प्रेरणा का अखंड भारतीय स्त्रोत कहा जा सकता है। जो जयशंकर प्रसाद के बाद आज इतने सालों के बाद भी उनके नाटक कालजयी और प्रासंगिक रहे हैं। हिंदी नाटक परंपरा में जयशंकर प्रसाद का योगदान एक समर्थ युगपुरुष की भांति हैं।*

हिंदी साहित्य में आधुनिक युग में जयशंकर प्रसाद एक मात्र ऐसे नाटककार रहे हैं, जिन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से भारतीय संस्कृति, इतिहास तथा भारतीय जीवन मूल्यों को कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनका नाट्य साहित्य भारतीय सांस्कृतिक चेतना का विराट तथा सशक्त कैनवास कहा जा सकता है।

आधुनिक युग में भौतिकता तथा पाश्चात्य प्रभाव के कारण भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के रक्षा की अनिवार्यता आज समय की मांग बन गई है। जिसे पूरा करने का कार्य जयशंकर प्रसाद के नाटकों के माध्यम से किया जा सकता है।

बीज शब्द : सांस्कृतिक, दर्शन, अस्मिता, वेद-उपनिषद,अवधारणा,राष्ट्ररक्षा,करुणा, राष्ट्रवाद, राष्ट्रबोध, चिंतन,उपभोक्तावादी आदि

प्रस्तावना-

हिंदी साहित्य के आधुनिक युग में जयशंकर प्रसाद एक मात्र ऐसे रचनाकार रहे है, जिन्होंने एक साथ नाटक,एकांकी, काव्य, महाकाव्य, उपन्यास, कहानी आदि विधाओं पर अपनी कलम चलाई है। विशेष रुप से उनके नाटक हिंदी नाट्य परंपरा में सांस्कृतिक पुनर्जागरण के प्रबल हस्ताक्षर रहे हैं। छायावाद के आधारस्तंभ के रुप में जयशंकर प्रसाद ने साहित्य को केवल सौंदर्यबोध तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि उसे भारतीय संस्कृति, इतिहास, दर्शन तथा राष्ट्रीय चेतना के साथ जोडने का अतुलनीय कार्य किया है। जयशंकर प्रसाद का साहित्य का उस काल से सृजन किया गया है, तब भारतीय समाज में विदेशी शासन काल के कारण आत्महीनता तथा सांस्कृतिक विस्मृति से ग्रस्त था। ऐसे विचित्र समय में उन्होंने भारत के गौरवशाली अतीत को अपनी प्रभावी नाट्य संपदा के माध्यम से राष्ट्रीय आत्मगौरव तथा सांस्कृतिक अस्मिता के तेजोमय विहार में ले जाकर खडा किया है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37551

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

प्रस्तुत शोध निबंध का उद्देश्य केवल जयशंकर प्रसाद के नाटको में चित्रित सांस्कृतिक पक्षों,ऐतिहासिक चेतना, सामाजिक-नैतिक मूल्य,नारी,दृष्टि, आध्यात्मिकता, भाषा-शैली और राष्ट्रीयता -का विस्तृत विवेचन-विश्लेषण करना है।

1.युगीन संदर्भ तथा वैचारिक पार्श्वभुमी-

जयशंकर प्रसाद का रचनाकाल भारतीय स्वतंत्रता का आंदोलन का काल कहा जा सकता है। यह युग राजनीतिक उत्थल-पुथल के साथ-साथ भारतीय सांस्कृतिक आत्मचेतना का युग भी कहना गलत नहीं होगा। ब्रिटिश हुकूमत के प्रभाव के कारण भारतीय समाज व्यवस्था में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण की मानों होड सी लगी थी, जिससे भारतीय मूल्यों को चुनौती मिल रही थी।

जयशंकर प्रसाद अपने कालखंड के बहुत ही प्रतिभासंपन्न और कार्यदक्ष साहित्यकार रहे है। इसी कारण उन्होंने इस काल की स्थिति को गहराई से अनुभव किया और अपने नाटकों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की जडों की ओर लौटने का आवाहन किया। इसी कारण उनके नाटक एक ओर ऐतिहासिक होते हुए भी समकालीन सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं से प्रतिबिंबित रहे थे।

जयशंकर प्रसाद की वैचारिक पृष्ठभूमि में भारतीय दर्शन,वेद-उपनिषद, बौध्द तथा जैन चिंतन और मानवतावादी विचारधारा का सुंदर समन्वय पाया जाता है।

2.संस्कृतिः अवधारणा तथा साहित्यिक समन्वय-

संस्कृति शब्द आज अनेक अर्थों में ग्रहण किया जाता हैा डॉ.गजानन सुर्वे ने संस्कृति की अवधारणा स्पष्ट करते हुए लिखा है कि- "आजकल बहुतसे विदवान संस्कृति का निर्देष स्थान, काल और धर्म के साथ करते है, जैसे इजिपशियन संस्कृति, इरानीयन संस्कृति, बाबिलोनियन संस्कृति, आदि निर्देष स्थान के साथ संबंधित है, प्राचीन संस्कृति, अर्वाचीन संस्कृति मध्यकालीन संस्कृति आदि काल के साथ संबंध रखते हैं, तथा हिंदू संस्कृति, मुस्लिम संस्कृति बुध्द संस्कृति, आदि धर्म के साथ संबंध रखनेवाले है।" 1जो व्यापक अर्थों में ग्रहण किया जाता है, जयशंकर प्रसाद के नाटकों में भारत के अतीत का प्रभावी अंकन पाया जाता है। उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि, अंग्रेजी हुकूमत के अधिपत्य में जकडे भारत भूमि को उन्होंने अपने नाटकों के माध्यम से एकसूत्र में बांधकर अपनी भारतमाता के प्रति आदरणीय भूमिका को स्पष्ट किया हैा प्रसाद के नाटकों में संस्कृति किसी उपदेशात्मक रुप में नहीं, बल्कि, पात्रों के आचरण, संवाद तथा संघर्ष के माध्यम से सजीव होकर दर्शकों के मन पर अमिठ छाप छोड देते हैं।

3. ऐतिहासिक चेतना तथा सांस्कृतिक गौरव का सुंदर समन्वय-प्रसाद के नाटक.

जयशंकर प्रसाद के नाटक अधिकांश रुप में ऐतिहासिक कथानक के धरातल पर लिखे गए है। उनके चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त, ध्रुवस्वामिनी, अजातशत्रु आदि नाटकों में इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं बल्कि सांस्कृतिक प्रेरणा का स्त्रोत बन गया है।

स्कंदगुप्त नाटक में हूण आक्रमण के संदर्भ में राष्ट्ररक्षा, त्याग और आत्मबल की भावना प्रकट होती है। इसी नाटक में भारतीय संस्कृति के उस आदर्श का प्रतिनिधित्त्व करता है, जिसमें व्यक्तिगत सुख के अधिक राष्ट्र और समाज का हित महत्त्वपूर्ण है। इसी प्रकार चंद्रगुप्त नाटक में चातुर्य के साथ-साथ सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय संगठन को संदेश निहित है। जयशंकर प्रसाद अपने नाटकों के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते है कि, भारत की सांस्कृतिक व्यक्ती ही उसकी वास्तविक पहचान रही है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

4. सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों की जबरदस्त अभिव्यक्ति-

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में सामाजिक तथा नैतिक मूल्य प्रमुख रुप से उभरकर आए है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार कर्तव्य,सत्य,न्याय,तथा करुणा है। जयशंकर प्रसाद के नाटकों के पात्र नैतिक दुविधाओं से गुजरते हुए भी अपने कर्तव्य से बिलकुल विचलित नहीं होते है। उनका स्कंदगुप्त नाटक का सम्राट का त्याग, चंद्रगुप्त में राष्ट्रहित में लिए गए कठोर निर्णय आदि प्रसंग विशेष चित्रित पात्र अवधारणा भारतीय नैतिक संस्कृति के जबरदस्त उदाहरण है। रामधारी सिंह दिनकर ने सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के लिए अपनी बात इस प्रकार प्रस्तुत किया है, उन्होंने लिखा है कि-"व्यक्ति के सद्गुण और सद्व्यवहार ही जीवनमूल्य है।" 2

जयशंकर प्रसाद अपने नाटकों के माध्यम से यह स्पष्ट करना चाहते है कि, संस्कृति केवल परंपरा का निर्वाह नहीं बल्कि नैतिक साहस तथा सामाजिक उतरदायित्त्व की जबरदस्त भावना है।

5. सांस्कृतिक चेतना तथा नारी चेतना का सुंदर समन्वय-

जयशंकर प्रसाद के नाटकों में सांस्कृतिक चेतना के परिप्रेक्ष्य में एक आभा अपने आप में एक अलग धरातल पर दिखाई देती है। उनका ध्रुवस्वामिनी नाटक सामाजिक रुढियों तथा अन्याय के विरुध्द करती हुई ध्रुवस्वामिनी की संघर्षगाथा को वाणी देता है। वह अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाती हुई दिखाई देती है। यह प्रसंग नारी की सांस्कृतिक मुक्ति का प्रतीक है। उनके नाटकों में नारी को केवल प्रेम या करुणा की प्रतीक न बनाकर उसे आत्मसम्मान, विवेक तथा निर्णयशीलता से युक्त व्यक्त्वि के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाता है। थोडे शब्दों में कहा जा सकता है कि, प्रसाद की नारी विषयक दृष्टि भारतीय संस्कृति की उस प्रवाह को अभिव्यक्त करता है, जिसमें भारतीय नारी की गौरवशाली परंपरा, व्यक्ति, सम्मान तथा समानता केा स्थान देने का अतुलनीय प्रयास किया गया है। डॉ.देवेद्र त्रिवेदी ने इसी बात को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि-"मानवीय मूल्य मानवीय समता और एकता पर बहुत बल देते हैं, मानवीय गरिमा और गौरव का समन्वय जयशंकर प्रसाद के नाटकों में पाया जाता हे।" 3

6.आध्यात्मिकता तथा दार्शनिकता का मणिकांचन मिलाप-

भारतीय संस्कृति का मूलाधार आध्यात्मिकता है। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में कर्म, धर्म तथा आत्मबल एवं नैतिकता का गहन-गंभीर दार्शनिक चिंतन पाया जाता है। उनके पात्र जीवन की समस्याओं का समाधान मात्र बाहय संघर्ष में नहीं बल्कि आंतरिक आत्मशक्ति में तलाशते दिखाई देते हैं। यह भारतीय दर्शन की मूल भावना रही है कि, जहाँ आत्मा की शुध्दता तथा कर्म की पवित्रता को सर्वोपरि महतता प्रदान की गई है। जयशंकर प्रसाद के आध्यात्मिक दृष्टिकोन मानवतावादी होते हुए वहा मानव को मानव में जोडने का श्रेष्ठ कार्य करता हुआ दिखाई देता है।

7. भाषा तथा संवाद एवं प्रतीकात्मकता में संस्कृति का बेजोड समन्वय-

जयशंकर प्रसाद के नाटकों की भाषा तथा संवादों के माध्यम से प्रतीकात्मकता में संस्कृति का बेजोड समन्वय पाया जाता है। जयशंकर प्रसाद के नाटकों की भाषा संस्कृतनिष्ठ,काव्यात्मक तथा गरिमामयी रही है। उनके नाटकों की भाषा में भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की अनोखी सुगंध मिलती है। उनके नाटकों के संवादों में ओज, प्रसाद और माधुर्य भावों तथा गुणों का समन्वय पाया जाता है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

उनके नाटकों की भाषा में प्रतीकों तथा बिंबों के माध्यम से वे सांस्कृतिक भावों को गइराई प्रदान करने में सफल हुए है। उनकी यह विशिष्ट शैली भारतीय नाट्य परंपरा से जुडी हुई है, जिसके कारण वह नाटकों को विशिष्टता प्रदान करती है।

8. राष्ट्रीयता तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण-

जयशंकर प्रसाद के नाटक सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के सशक्त माध्यम है। उनका राष्ट्रबोध संकीर्ण न होकर सास्कृतिक तथा मानवीय भावों से प्रेरित है। जयशंकर प्रसाद अपने नाटको के माध्यम से अतीत के गौरव को प्रस्तुत कर वर्तमान को आत्मविश्वास तथा प्रेरणा प्रदान करने का कार्य करते है। इसी कारण कहना तर्कसंगत होगा कि, उनके नाटक राष्ट्रीय चेतना के दर्शन के साथ-साथ सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य करते हैं।

9. समकालीन प्रासंगिकता-

आज करीब सौ साल के बाद भी भौतिकवादी तथा उपभोक्तावादी परिवेश और युग में जब नैतिक एवं सांस्कृतिक मूल्य संकट में ऐसे समय जयशंकर प्रसाद के नाटक अत्यंत प्रासंगिक लगते है। उनके नाटकों में निहित कर्तव्यबोध, नारी सम्मान, सामाजिक उत्तरदायित्त्व तथा आध्यात्मिक नजरिया आज के समाज के लिए काफी मार्गदर्शक सिध्द लगता है।

10. समन्वित निष्कर्ष-

समन्वित निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि, जयशंकर प्रसाद के नाटक भारतीय संस्कृति के सशक्त संवाहक है। उन्होंने इतिहास, समाज, नारी, दर्शन तथा राष्ट्र इन आयामों को अपनी प्रबल नाट्यकला के माध्यम से एक समग्र सांस्कृतिक मंच प्रदान करने का कार्य किया है। उनका नाटक साहित्य केवल अतीत की स्मृति नहीं बल्कि, वर्तमान तथा भविष्य के लिए सांस्कृतिक प्रेरणा का प्रबल स्त्रोत कहा जा सकता है। हिंदी नाटक परंपरा में जयशंकर प्रसाद का योगदान अद्वितीय तथा कालजयी है।

संदर्भस्त्रोत-

1. स्वातंत्रोतर हिंदी नाटकों का सांस्कृतिक अध्ययन- डॉ.गजानन सुर्वे- पृ.37
2. संस्कृति के चार अध्याय- रामधारी सिंह दिनकर- पृ. 372.
3. हिंदी नाटक और मानवीय मूल्य- डॉ. देवेंद्र त्रिवेदी पृ.38